इकाई 26 मार्क्सवाद

इकाई की रूपरेखा

26.0 उद्देश्य
26.1 प्रस्तावना
26.2 मार्क्सवाद क्या है?
26.2.1 काल्पनिक (Utopian) और वैज्ञानिक समाजवाद
26.2.2 विकासवादी और क्रांतिवादी समाजवाद
26.3 मार्क्सवाद के बुनियादी सिद्धांत
26.3.1 द्वन्द्वात्मक भौतिकवाद
26.3.2 ऐतिहासिक भौतिकवाद
26.3.3 अतिरिक्त मूल्य का सिद्धांत
26.3.4 वर्ग-संघर्ष
26.3.5 क्रांति
26.3.6 सर्वहारा वर्ग का अधिनायकत्व
26.3.7 साम्यवाद
26.4 अलगाव का सिद्धांत
26.5 स्वतंत्रता का सिद्धांत
26.6 आलोचनात्मक समीक्षा और अवलोकन
26.7 सारांष
26.8 कुछ उपयोगी पुस्तकें
26.9 बोध प्रश्नों के उत्तर

26.0 उद्देश्य

इस इकाई में आप कार्ल मार्क्स तथा अन्य द्वारा प्रतिपादित मार्क्सवाद के सिद्धांत और व्यवहार के बारे में जान पाएँगे। दर्षन के बुनियादी तत्त्वों, द्वन्द्वात्मक और ऐतिहासिक भौतिकवाद, अतिरिक्त मूल्य का सिद्धांत, वर्ग-संघर्ष, क्रांति, सर्वहारा वर्ग का अधिनायकत्व और साम्यवाद की विस्तार से चर्चा की गई है। इस इकाई को पढ़ने के बाद आप :

- समाजवाद के पूर्व-मार्क्सवाद के सूत्र, जैसे कि काल्पनिक समाजवाद की चर्चा कर पाएँगे;
- मार्क्सवाद के बुनियादी परिकल्पनाओं का आंकलन, वर्णन तथा चर्चा कर सकेंगे;
- मार्क्सवादी सिद्धांत के दूसरे प्रमुख अंगों जैसे अलगाव और स्वतंत्रता के सिद्धांत की विवेचना कर पाएँगे और अंततः; तथा
- मार्क्सवाद की समीक्षा और इसकी समकालीन प्रासंगिकता की विवेचना कर पाएँगे।

26.1 प्रस्तावना

इस इकाई का उद्देष्य मार्क्सवाद के सिद्धांतों का परीक्षण और व्याख्या करना है, जोकि हमारे युग की सबसे क्रांतिकारी विचारधारा है। उदारवाद के साथ मार्क्सवाद हमारे समय के सबसे प्रमुख दर्षन की श्रेणी में आता है। उदारवाद, आदर्षवाद और मार्क्सवाद राजनीति विज्ञान के तीन महत्त्वपूर्ण सिद्धांत हैं। सी.एल. वेपर ने राज्य संबंधी विभिन्न विचारधाराओं

को तीन भागों में बाँटा है, जैसे मषीनरी के रूप में, यांत्रिक रूप में और वर्ग के रूप में। दूसरे शब्दों में, राज्य की जैविक विचारधारा, राज्य की यांत्रिक विचारधारा और राज्य की वर्ग संबंधी विचारधारा। जैविक विचारधारा आदर्षवाद है, यांत्रिक विचारधारा उदारवाद है और वर्ग की विचारधारा मार्क्सवाद है।

इस इकाई को मार्क्सवाद की परिभाषा, काल्पनिक और वैज्ञानिक समाजवाद, क्रांतिकारी और विकासवादी समाजवाद, मार्क्सवाद के मुख्य सिद्धांतों, समीक्षा तथा निष्कर्ष के रूप में विभाजित किया गया है। मार्क्सवाद के सात प्रमुख सिद्धांत हैं, जैसे द्वन्द्वात्मक भौतिकवाद, ऐतिहासिक भौतिकवाद, अतिरिक्त मूल्य का सिद्धांत, वर्ग संघर्ष, क्रांति, सर्वहारा वर्ग का अधिनायकत्व और साम्यवाद। अलगाव और स्वतंत्रता की अवधारणा जोकि सामन्यतया युवा मार्क्स से संबंधित हैं या मार्क्सवाद के मानवीय मुखौटा की भी चर्चा की गई है।

26.2 मार्क्सवाद क्या है?

मार्क्सवाद सामान्यतया जर्मन दार्षनिक कार्ल मार्क्स के विचारों को दर्षाता है, लेकिन मार्क्सवाद का अर्थ सिर्फ मार्क्स के विचार नहीं हैं। मार्क्सवाद विचारों के उस भाग को प्रकट करता है, जो मुख्य रूप से कार्ल मार्क्स के विचारों को समाहित करते हैं। इसके अंतर्गत मार्क्स, फ्रिडरिष एंगेल्ज़ और उनके समर्थकों के विचार शामिल हैं, जो अपने आप को मार्क्सवादियों के नाम से पुकारते हैं। मार्क्सवाद एक जीवन दर्षन है। मार्क्सवाद विचारक लगातार मार्क्सवादी दर्षन को अपना योगदान देते रहे हैं। इस प्रकार यह कहा जाता है कि मार्क्स मर गये हैं, परन्तु मार्क्सवाद अभी भी जीवित है।

मार्क्सवादी दर्षन काल मार्क्स के जन्म के पहले भी अस्तित्व में था। इसी कारण से डेविड मैक्लेलन ने मार्क्सवाद पर तीन पुस्तकों को लिखा है; *मार्कसिज़्म बिफोर मार्क्स, थॉट ऑफ मार्क्स और मार्कसिज़्म आफ्टर मार्क्स।* उसी प्रकार पोलिष विचार लेसज़ेक कोलाकोस्की ने मार्क्सवाद पर तीन पुस्तकों को लिखा है। यह बात फिर उठती है कि मार्क्सवाद का अर्थ मात्र कार्ल मार्क्स के विचार नहीं हैं।

26.2.1 काल्पनिक (Utopian) और वैज्ञानिक समाजवाद

जैसा कि पहले कहा जा चुका है, मार्क्सवाद का अस्तित्व मार्क्स से पहले से था। ये पहले के समाजवादी विचारकों के रूप में जाने जाते हैं। कार्ल मार्क्स उन्हें काल्पनिक समाजवादी पुकारते हैं। वे काल्पनिक थे, क्योंकि उनकी सामाजिक बुराइयों की पहचान सही थी, लेकिन उनका निदान गलत था। यह अव्यवहारिक था, अतः वे काल्पनिक कहे जाते थे। जहाँ कोई शोषण नहीं था और लोग खुष थे। यूटोपिया शब्द की उत्पत्ति थॉमस मूर की *यूटोपिया* नामक उपन्यास से हुई। यूटोपिया शब्द एक काल्पनिक द्वीप को सूचित करता है, जहाँ एक दोषरहित सामाजिक-आर्थिक-राजनीतिक प्रणाली का अस्तित्व था; कुछ प्रमुख काल्पनिक समाजवादी विचारक हैं रॉबर्ट ओवेन, चार्ल्स फूरियर, लुइस ब्लां, सेंट साइमन, सिसमोंड़ी और प्राऊधौन।

26.2.2 विकासवादी और क्रांतिवादी समाजवाद

समाजवाद आगे विकासवादी और क्रांतिकारी समाजवाद में विभक्त किया जाता है। विकासवादी समाजवाद क्रांति में विष्वास नहीं करता है और समाजवाद को शांतिप्रिय तरीके से प्राप्त करना चाहता है। विकासवादी समाजवादियों का विष्वास संसदीय प्रजातंत्र में है और वे सामाजिक परिवर्तन मतदान के माध्यम से लाना चाहते हैं। वे हिंसा को त्यागते हैं और इस प्रकार हिंसायुक्त क्रांति के विरोधी हैं। वे सर्वहारा वर्ग के अधिनायकत्व को भी

नहीं स्वीकारते हैं और वर्गयुक्त समाज से वर्गविहीन समाज तक को शांतिप्रिय प्रजातांत्रिक परिवर्तन से लाना चाहते हैं। फेबियन समाजवाद, जितड़ (Guild) समाजवाद और प्रजातांत्रिक समाजवाद विकासवादी समाजवाद के विभिन्न प्रकार हैं।

दूसरी तरफ क्रांतिकारी समाजवाद वर्ग-संघर्ष, क्रांति तथा सर्वहारा वर्ग के अधिनायकत्व में विष्वास करता है। उसके अनुसार सामाजिक परिवर्तन शांतिप्रिय ढंग से नहीं हो सकता है, इसे हिंसात्मक होना चाहिए। शांतिप्रिय क्रांति अपने आप में विरोधाभास पैदा करती है। क्रांति सामाजिक परिवर्तन की दाई है और इस क्रांति को अवहम हिंसात्मक होना चाहिए। क्रांतिकारी मार्क्सवाद, कार्ल मार्क्स के वैज्ञानिक समाजवाद के समकक्ष, सामान्यतया समझा जाता है। श्रमिक संघवाद भी क्रांतिकारी समाजवाद का एक रूप है।

विकासवादी समाजवाद भी कार्ल मार्क्स और एंगेल्ज़ की विचारधाराओं में अपने मूल को ढूँढ़ते हैं। उन्होंने राज्य के अपने आप समाप्त होने की बातें की हैं। विकासवादी समाजवाद के प्रतिपादकों ने राज्य के स्वतः विनष्टता के सिद्धांत का प्रतिपादन किया है और तर्क दिया है कि शांतिप्रिय माध्यम से धीरे-धीरे सामाजिक परिवर्तन को प्रभावित किया जा सकता है और शोषणविहीन और वर्गविहीन समाज की स्थापना की जा सकती है। फिर भी विकासवादी समाजवाद के आलोचक इस धारणा को स्वीकार नहीं करते हैं और तर्क देते हैं कि राज्य के स्वतः विनाष की विचारधारा सिर्फ समाजवादी राज्य या सर्वहारा वर्ग के अधिनायकत्व पर लागू होती है और पूँजीवादी राज्य पर नहीं। यह स्वतः विनष्ट नहीं होगा। इसे हिंसात्मक क्रांति के द्वारा नष्ट किया जाना चाहिए। अतः विकासवादी समाजवाद के तर्क में कमी है।

बोध प्रष्न 1

नोटः i) अपने उत्तर के लिए नीचे दिए गए रिक्त स्थान का प्रयोग करें।

ii) अपने उत्तरों के सुझावों के लिये इकाई का अन्त देखें।

1) काल्पनिक और वैज्ञानिक समाजवाद के बीच अंतर स्पष्ट करें।

....

....

....

....

....

....

2) विकासवादी और क्रांतिकारी समाजवाद के अंतर स्पष्ट करें।

....

....

....

....

....

26.3 मार्क्सवाद के बुनियादी सिद्धांत

मार्क्सवाद के बुनियादी सिद्धांत इस प्रकार हैं : द्वन्द्वात्मक भौतिकवाद, ऐतिहासिक भौतिकवाद, अतिरिक्त मूल्य का सिद्धांत, वर्ग संघर्ष, क्रांति, सर्वहारा वर्ग का अधिनायकत्व और साम्यवाद। अब, इन सिद्धांतों पर विस्तार से चर्चा की जाएगी।

26.3.1 द्वन्द्वात्मक भौतिकवाद

द्वन्द्वात्मक भौतिकवाद इतिहास की व्याख्या के लिए मार्क्स और एंगेल्ज़ द्वारा विकसित वैज्ञानिक विधि है। यहाँ मार्क्स पूर्ववर्ती विचारकों, विषेषतया, जर्मन दार्षनिक हेगेल से पूरी तरह प्रभावित हैं। द्वन्द्वात्मक (Dialectics) एक बहुत पुरानी विधि है, विरोधी विचारने के संघर्ष के माध्यम से विरोधाभासों को व्यक्त करते हुए सत्य को जानने के लिए इसका प्रयोग किया जाता है। हेगेल ने संवाद (Thesis), प्रति-संवाद (Anti-thesis) तथा संष्लेषण (Synthesis) के तीनों रूपों को विकसित करके इसे पेष किया है। द्वन्द्वात्मक त्रिगुण (Dialectical Triad) के नाम से मुख्य रूप से इसे जाना जाता हैं। प्रगति या विकास द्वन्द्वात्मक प्रक्रिया से होता है। विकास की प्रत्येक अवस्था में, यह विरोधाभासों द्वारा वर्गीकृत किया जाता है। ये विरोधाभास आने वाले परिवर्तन, प्रगति और विकास को प्रेरित करते हैं। संवाद को इसके प्रति–संवाद के द्वारा चुनाती दी जाती है। दोनों में सच्चाई और असत्यता क्षणभंगुर होती है। संवाद और प्रति-संवाद के संघर्ष के परिणामस्वरूप, सच्चाई बरकरार रहती है, लेकिन असत्य तत्त्व नष्ट हो जाते हैं। ये असत्य तत्त्व विरोधाभासों को जन्म देते हैं। संवाद और प्रति-संवाद के सच्चे तत्त्व संष्लेषण में एक साथ मिला दिये जाते हैं। यह विकसित संष्लेषण समय के अंतराल में संवाद बन जाता है और इस प्रकार यह पुनः अपने विरोधी प्रति-संवाद द्वारा चुनौती प्राप्त करता है, जो पुनः संष्लेषण में बदल जाता है। यह संवाद, प्रति-संवाद और संष्लेषण की प्रक्रिया तब तक चलती है, जब तक यह पूर्णता की अवस्था तक नहीं पहुँच जाती है। इस विकासवादी प्रक्रिया में नयी अवस्था आएगी, जब कोई असत्य तत्त्व नहीं होगा। ये विकास के विभिन्न अवस्थाओं में नष्ट हो जाएँगे। अंततः सिर्फ सत्य ही बचता है, क्योंकि यह कभी भी नष्ट नहीं होता है। यह पूर्ण अवस्था को जन्म देगा और कोई विरोधाभास नहीं होगा और इस प्रकार आगे कोई विकास नहीं होगा। द्वन्द्वात्मक प्रक्रिया का अंत पूर्ण सत्य पर पहुँचने के बाद हो जाएगा। यह विरोधाभास है, जो द्वन्द्वात्मक प्रक्रिया को बढ़ाते हैं और विरोधाभास का पूरा विनाष अपने आप से द्वन्द्वात्मक प्रक्रिया के अंत को सूचित करता है।

भौतिकवाद के लिए मार्क्स भौतिकवाद के फ्रेंच विद्यापीठ, मुख्यतया फ्रेंच भौतिकवादी विचारक लुडविग फ्युरबैक के पूरी तरह से ऋणी हैं। यह पदार्थ है, जो आखिरकार में वास्तविकता है न कि विचार। बाद वाला पहले का प्रतिबिम्ब है। हम कैसे अपनी रोटी कमाते हैं, यह हमारे विचारों को निर्धारित करता है। यह व्यक्तियों की चेतना नहीं होती है, जो उनके अस्तित्व का निर्धारण करती है। इसके विपरीत, यह उनका सामाजिक अस्तित्व होता है, जो उनके चेतन का निर्धारण करता है। मार्क्स ने टिप्पणी की है कि ''हेगेल का द्वन्द्वात्मक अपने सिर के बल खड़ा था और मैंने उसे पैरों पर खड़ा किया है''। हेगेल ने द्वन्द्वात्मक आदर्षवाद का विकास किया है। उनके अनुसार ये विचार हैं, जो अंततः पदार्थ होते हैं। विचार आधार या उप-संरचना में निहीत होता है, जो श्रेष्ठ संरचना में सभी चीज़ों को निर्धारित करता है। समाज, राजनीति और अर्थ व्यवस्था इस श्रेष्ठ संरचना के अंतर्गत हैं, जिसे उस समय के प्रचलित प्रभारी विचारों द्वारा आकार प्रदान किया जाता है। अंततः यही विचार हैं, जो पदार्थ के साथ स्थानांतरित होते हैं। मार्क्स के अनुसार, भौतिक या आर्थिक बल उप-संरचना के अंतर्गत आते हैं और विचार श्रेष्ठ संरचना का एक अंग हैं। विचार भौतिक बलों का प्रतिबिम्ब हैं। आर्थिक बल विचार को निर्धारित करता है और न

कि दोनों को। इस प्रकार मार्क्स ने विचार और पदार्थ की स्थिति को पलट दिया है। यही कारण है कि वे दावा करते हैं कि ''हेगेल का विचार नीचे की ओर झुका हुआ था और मैंने उसे ठीक किया है''।

आधार या उप-संरचना के अंतर्गत उत्पादन का तरीका और उत्पादन के संबंध निहित होते हैं। ये दोनों मिलकर उत्पादन के रूप को जन्म देते हैं। उत्पादन के तरीके में परिवर्तन तकनीकी विकास के कारण होता है, यह उत्पादन के संबंधों में परिवर्तन लाता है। इस प्रकार उत्पादन के रूप के परिवर्तन श्रेष्ठ संरचना में अनुकूल परिवर्तन लाते हैं। समाज, राजनीति, धर्म, नैतिकता, मूल्यों, आदर्षों इत्यादि श्रेष्ठ संरचना के अंग हैं और उत्पादन के रूप द्वारा निर्धारित होते हैं।

26.3.2 ऐतिहासिक भौतिकवाद

ऐतिहासिक भौतिकवाद द्वन्दात्मक भौतिकवाद के प्रयोग में इतिहास की व्याख्या करता है। यह द्वन्दात्मक भौतिकवाद की मार्क्सवादी विधि को लागू करने में विष्व इतिहास की आर्थिक व्याख्या करता है। विष्व इतिहास को चार अवस्थाओं में बांटा गया है : प्रारम्भिक साम्यवाद, दास प्रथा, सामंतवाद और पूँजीवाद।

प्रारम्भिक साम्यवाद, मानव इतिहास के सबसे प्रारम्भिक काल को सूचित करता है। यह काल सम्पत्तिविहीन, शोषणविहीन, वर्गविहीन और 'राज्यविहीन समाज था। उत्पादन के साधन पिछड़े हुऐ थे, क्योंकि तकनीकी अविकसित थी। समुदाय उत्पादन के साधनों का स्वामी था। वे निजी स्वामीतत्व के अंतर्गत नहीं थे और कोई शोषण नहीं था। षिकार के लिये पत्थर के हथियार, मछली फंसाने के जाल और अंकुड़ी (hooks) उत्पादन के साधान थे। समूचा समुदाय इनका स्वामी था। उत्पादन सीमित था और स्व-खपत के लिए किया जाता था। कोई अतिरिक्त उत्पादन नहीं था, तो कोई शोषण नहीं था। जब कोई शोषण नहीं था तो कोई वर्ग विभाजन नहीं था। जब कोई वर्ग विभाजन नहीं था, तो कोई वर्ग संघर्ष नहीं था, तो कोई राज्य नहीं था। इस प्रकार यह साम्यवादी समाज था, लेकिन अदिकालीन प्रकार का था। फिर भी ज़िन्दगी कठिन थी। इसे शोषण, कलह और संघर्ष के अभाव के द्वारा निर्धारित किया जाता था।

तकनीक स्थिर नहीं है; यह लगातार विकसित होती है। तकनीकी विकास उत्पादन में सुधार के लिए होता है। जिससे अतिरिक्त उत्पादन होता है, जो व्यक्तिगत् सम्पत्ति का आर्विभाव करता है। अब उत्पादन के साधन समुदाय के अंतर्गत नही होते हैं, बल्कि निजी स्वामित्व के अंतर्गत आ जाते है। इस प्रकार समाज सम्पत्तिवालों और सम्पत्तिविहीन वर्गों में बंट जाता है। उत्पादन के साधनों पर स्वामित्व होने की वजह से सम्पत्ति वाले वर्ग सम्पत्तिविहीन वर्ग का शोषण करते हैं। चूँकि संघर्ष होता है, प्रभावी वर्ग, यानि की सम्पत्ति वाला वर्ग राज्य नाम की एक दमनकारी संस्था का निर्माण करते हैं, जोकि अर्धानस्थ की यानि कि सम्पत्तिहीन वर्ग के विरोध को कुचलता है। इस प्रकार राज्य एक वर्ग यंत्र और दमनकारी संस्था है। यह अपने निर्माता के हितों की रक्षा करता है, जो सम्पत्तिवाले वर्ग हैं।

प्रारम्भ में इस समाज को स्वामी और गुलाम के रूप में बांटा गया है। स्वामी सम्पत्तिवाले (the haves) हैं और गुलाम सम्पत्तिविहीन (the have nots) हैं। गुलाम उत्पादन के सारे कार्य को करते हैं। स्वामी गुलामों की मेहनत पर जीते हैं। वे गुलामों का शोषण करते हैं और जब कभी गुलाम विरोध करते हैं, तब राज्य स्वामी के बचाव में आता है। इस प्रकार, राज्य स्वामी वर्ग के हितों की रक्षा करता है। यह अपनी दमनकारी शक्तियों से गुलामों की आवाज़ को दबाता है।

दास प्रथा का सामंतवाद अनुगामी बन जाता है। तकनीकी विकास उत्पादन के साधन में परिवर्तन लाता है और यह उत्पादन और श्रेष्ठ संरचना के संबंध में अनुकूल परिवर्तन लाता है। दास प्रथा उत्पादन के सामंती ढ़ांचे में परिवर्तित हो जाता है और यह समाज, राजनीति, नैतिकता और मूल्य प्रणाली में झलकता है। समाज का सामंतों और किसानों में विभाजन सामंतवाद को दर्षाता है। सामंतों का उत्पादन के साधनों पर अधिपत्य होता है, यह भूमि है, लेकिन किसान उत्पादन कार्य करता है। भूमिध्य का स्वामित्व होने के कारण, सामंत बिना कुछ किये उत्पादन का बड़ा हिस्सा प्राप्त करता है। इस प्रकार सामंत परजीवी (parasite) के सामान होता है, जो किसानों की मेहनत पर संपन्न होता हैं। सामंत किसानों का शोषण करता है और यदि किसान कभी अपने शोषण का विरोध करता है, तो उसके विरोध को राज्य निर्दयता से कुचल देता है, क्योंकि राज्य सामंतो के हितों की रक्षा और उनकी सेवा करता है। जहाँ किसान आश्रित और शोषित वर्ग होता है, वहीं स्वामी प्रभावी और शोषक वर्ग होता है।

पूँजीवाद सामंतवाद का अनुगामी होता है। तकनीकी विकास जारी रहता है, इसलिए उत्पादन की षिक्तियों में परिवर्तन होता है, जो उत्पादन की शक्तियों और उत्पादन के संबंधों के बीच बेमेल हो जाता है, जिसका समाधान मध्य वर्ग (bourgeois) की क्रांति से होता है। इस प्रकार उत्पादन की शक्तियों और उत्पादन का सामंती ढाँचा पूँजीवादी ढाँचे में बदल जाता है। समाज का मध्य वर्ग और सर्वहारा वर्ग में विभाजन पूँजीवाद को दर्षाता है। मध्य वर्ग का उत्पादन के साधनों पर अधिकार होता है, लेकिन सर्वहारा वर्ग उत्पादन करता है। सर्वहारा लोग औद्योगिक श्रमिक होते हैं; वे कम वेतन के बदले अपना श्रम बेचते हैं। यह व्यवहारतः आजीविका के लिए वेतन होता है, जिससे श्रम शक्ति को अबाधित आपूर्ति को बरकरार रखा जा सकता है। उत्पादन स्वयं के खपत के लिए नहीं होता है, बल्कि मुनाफे के लिए होता है। अधिकतम मुनाफे की इच्छा वेतन में कमी और कार्यविधि में बढ़ोत्तरी करती है। यह आगे श्रमिक वर्ग की स्थिति को बिगाड़ता है, जो अंततः उन्हें इस स्थिति में पहुँचा देता हैं, जहाँ खोने के लिए कुछ नहीं होता है। यह सर्वहारा क्रांति के लिए मार्ग प्रषस्त करता है।

बोध प्रष्न 2

नोटः i) अपने उत्तर के लिए नीचे दिए गए रिक्त स्थान का प्रयोग करें।

ii) अपने उत्तरों के सुझावों के लिये इकाई का अन्त देखें।

1) द्वन्दात्मक भौतिकवाद के अर्थ को अपने शब्दों में व्यक्त करें।

....

....

....

....

....

....

....

....

....

2) प्रारम्भिक साम्यवाद या सामंतवाद के मुख्य्य विषेषताओं की गणना और वर्णन करें।

....

....

....

....

....

....

26.3.3 अतिरिक्त मूल्य का सिद्धांत

मार्क्स ने पूँजीवादी समाज में शोषण की व्याख्या करने के लिए अतिरिक्त मूल्य के सिद्धांत को विकसित किया है। यहाँ मार्क्स वर्गीय अर्थषास्त्रियों के सिद्धांतों से प्रभावित थे। वे मूल्य के श्रम सिद्धांत से सहमत थे। सामान का मूल्य इसके उत्पादन में लगे श्रम की मात्रा से आंका जाता है। श्रम भी एक सामान है। इसे दूसरे सामानों की तरह खरीदा और बेचा जा सकता है। उत्पादन के चार कारकों में श्रम सबसे सर्वोच्च है। इसके अभाव में उत्पादन के दूसरे कारक बेकार हैं। भूमि पूँजी और संगठन उत्पादन के अन्य दूसरे कारक बेकार हैं। भूमि पूँजी और संगठन उत्पादन के अन्य दूसरे कारक हैं। उत्पादन के इन कारकों के लिए श्रम का प्रयोग होता है, जो उन्हें उत्पादक बनाता है। श्रम के अभाव में वे बंजर होते हैं।

यदि वेतन श्रमिक द्वारा उत्पन्न की गयी रकम के अनुपात में दिया जाता है, तो कोई शोषण नहीं होता है, लेकिन यह अवस्था पूँजीवाद में नयी होती हैं। श्रम इस अर्थ में अनोखा होता है कि यह अपने रख-रखाव से ज़्यादा मूल्य उत्पन्न करता है। श्रमिक द्वारा उत्पन्न किये गये मूल्य तथा श्रमिकों को वेतन के रूप में दिए गए मूल्य में अंतर होता है, जिससे अतिरिक्त मूल्य उत्पन्न तथा पूँजीपति को मुनाफा होता है। उदाहरण के तौर पर, यदि कोई श्रमिक एक महीने में 25,000 रुपये मूल्य उत्पन्न करता है और उसे वेतन के रूप में 15,000 रुपये दिये जाते हैं, तो बचे हुए 10,000 रुपये पूँजीवादी का लाभ होगा। इस प्रकार श्रमिक सदैव अधिक मूल्य पैदा करते हैं, जितना उसे वास्तव में मिलता है। श्रमिक द्वारा उत्पन्न यह अतिरिक्त मूल्य मध्यवर्ग (bourgeois) का लाभ होता है, जिसका बचाव वर्गीय अर्थषास्त्री करते हैं, क्योंकि यह संपत्ति संग्रह करता है, जिसे आगे नये उद्योगों तथा उपक्रमों में लगाया जाता है और जिससे विकास और खुषहाली आती है। मार्क्सवादियों के अनुसार, यह श्रमिकों का शोषण हैं, जिसे समाप्त किया जाना चाहिए।

पूँजीवाद के विकास और प्रतियोगिता में बढ़ोतरी होने से श्रमिकों के वेतन में लगातार गिरावट आती है और आजीविका स्तर की अवस्था आ जाती है। आजीविका वेतन रहने और श्रम शक्ति के स्थायीकरण के लिए न्यूनतम वेतन होता है। इस प्रकार पूँजीवाद में गहन प्रतियोगिता सर्वहारा की अति क्षति का सूचक होता है। यह वर्ग संघर्ष को बढ़ावा देता है और अंततः क्रांति को लाता है।

26.3.4 वर्ग-संघर्ष

मार्क्स के अनुसार, अभी तक के सभी समाजों का इतिहास वर्ग संघर्ष का इतिहास रहा है। सिवाय प्रारम्भिक साम्यवादी अवस्था को छोड़कर सभी ऐतिहासिक कालों में प्रभावी और आश्रित वर्गों या सम्पत्ति वाले और सम्पत्तिविहीन के बीच सक्रिय विरोध रहा है। यह सक्रिय

विरोध वर्ग विरोधाभासों से पैदा होता है; यह सम्पत्तिविहीन वर्ग का सम्पत्ति वाले वर्ग द्वारा शोषण के परिणामस्वरूप होता है। पूरे इतिहास में प्रत्येक युग में दो विरोधी वर्ग रहे हैं। दास प्रथा में स्वामी और दास, सामंतवादी प्रथा में सामंत और मध्य वर्ग उत्पादन के साधनों के स्वामी हैं। दास, किसान और सर्वहारा उत्पादन करते हैं, लेकिन उनके उत्पाद को उनके शोषकों के द्वारा ले लिया जाता है और बदले में उन्हें सिर्फ़ दैनिक गुज़ारे के लिए वेतन देते हैं। उत्पादन के साधनों पर स्वामित्व होने के कारण सम्पत्ति वाले वर्ग सम्पत्तिविहीन का शोषण करते हैं। यही वर्ग संघर्ष का मुख्य स्रोत और कारण हैं। विरोधी वर्गों के बीच कोई समझौता या मेल संभव नहीं है। प्रत्येक युग में विरोधी वर्गों के अन्तर्निहित विरोधाभासों को सिर्फ़ शोषित वर्गों के सर्वनाश से सुलझाया जा सकता है।

26.3.5 क्रांति

वर्ग संघर्ष क्रांति के लिए मार्ग प्रषस्त करता है। वर्ग संघर्ष अतींद्रिय (imperaceptible) होता है, लेकिन क्रांति अनुभवगम्य (perceptible) होती है। वर्ग संघर्ष की तीव्रता क्रांति के लिए आधार का निर्माण करती है। वर्ग संघर्ष लम्बे समय तक चलने वाली गतिविधि है, लेकिन क्रांति थोड़े समय के लिए तेज़ी से और हिंसात्सक होती है। मार्क्स के शब्दों में ''क्रांति सामाजिक परिवर्तन की आवष्यक दाई होती है''। सामंती क्रांति ने दास प्रथा को खत्म कर दिया, मध्यवर्गीय क्रांति ने सामंतवाद को खत्म किया और सर्वहारा क्रांति पूँजीवाद का अंत करेगी। इस प्रकार किसी भी युग में सामाजिक परिवर्तन सदैव क्रांति के द्वारा किया जाता है।

क्रांति होती है, जब उत्पादन की शक्तियों या साधनों और उत्पादन के संबंधों के बीच असामंजस्य होता है। इस असमांजस्य का सामाधान करने के लिए क्रांति होती है, जो उत्पादन के साधनों या शक्तियों के साथ सामंजस्य लाने के लिए उत्पादन के संबंधों और श्रेष्ठ सरंचना में अनुकूल परिवर्तन लाती है। तकनीकी विकास उत्पादन के साधनों में परिवर्तन लाता है। हस्तषिल्प आपको सामंती समाज प्रदान करते हैं और आपचालित (steam) मिल, औद्योगिक पूँजीवादी समाज देते है।

सर्वहारा क्रांति इतिहास के वार्षिकी वृत्तांत में अंतिम क्रांति होगी। क्रांति विरोधाभासों के समाधान के लिए होती है। इसलिए क्रांति नहीं होगी, यदि समाज में कोई विरोधाभास नहीं होगा। सर्वहारा क्रांति के बाद, आगे कोई क्रांति नहीं होगी, क्योंकि कोई विरोधाभास नहीं होगा फिर भी, क्रांति तब होगी, केवल जब उत्पादन की शक्तियां पूरी तरह परिपक्व हो जायेंगी और उत्पादन के संबंधों से मेल नहीं खायेंगी। क्रांति इस बेमेल का अंत करती है।

सामाजिक विकास के क्रम और दिषा को परिवर्तित नहीं किया जा सकता है। कोई भी अवस्था दूसरी अवस्था को नज़रअंदाज़ नहीं कर सकती है। कोई भी अवस्था छोटी-परिधि वाली नही हो सकती है। प्रारम्भिक साम्यवाद से दास प्रथा, दास प्रथा से सामंतवाद और सामंतवाद से पूँजीवाद सर्वहारा का अधिनायकत्व या समाजवाद पूँजीवाद पर विजय प्राप्त करेगा, जो सामाजिक विकास की अंतिम से पहली अवस्था होती है। सर्वहारा का अधिनायकत्व अंततः साम्यवाद की स्थापना करेगा। सर्वहारा क्रांति के साथ, क्रांति का स्वतः अंत हो जाएगा।

26.3.6 सर्वहारा वर्ग का अधिनायकत्व

सर्वहारा क्रांति सर्वहारा के अधिनायकत्व की स्थापना करेगी। यह समाजवादी राज्य के नाम से भी जानी जाती है। मध्यवर्ग द्वारा उत्पन्न राज्य के अंग, सर्वहारा के दबाने वालों को, सर्वहारा मध्य वर्ग के विरुद्ध राज्य के यंत्र का इस्तेमाल करेगा। मध्य वर्ग पुरानी व्यवस्था

को पुनः प्राप्त करने के लिए विरोधी-क्रांति करने की कोषिष करेगा और इस प्रकार राज्य की दमनकारी संस्थाओं द्वारा मध्य वर्ग को नियंत्रित करने की आवष्यकता होती है।

राज्य सदैव दमन का साधन रहा है। प्रभावी वर्ग ने आश्रित वर्ग पर दमन करने के लिए राज्य की उत्पत्ति की है। यह एक वर्ग साधन है। राज्य रक्षा करता है और अपने निर्माता के हितों का ख्याल करता है, जो सम्पत्ति संपन्न वर्ग होता है। यह वर्ग सदैव अल्पसंख्यक रहा है, चाहे वह स्वामी या सामंत या पूँजीपति हो। इस प्रकार अल्पसंख्यक बहुसंख्यक का शोषण करते रहे हैं, जैसे गुलामों या किसानों या सर्वहारा का राज्य के दमनकारी अंगों द्वारा। सर्वहारा के अधिनायकत्व के अंतर्गत, पहली बार राज्य बहुसंख्यक के नियंत्रण में आता है। अब पहली बार राज्य के दमनकारी यंत्र का उपयोग बहुसंख्यक के विरुद्ध अल्पसंख्यक द्वारा होता है।

मार्क्स के अनुसार सभी राज्यों का अधिनायकत्व रहा है। अतः समाजवादी राज्य कोई अपवाद नहीं है। यह भी एक अधिनायकत्व है। राज्य का इस्तेमाल सदैव एक वर्ग का दूसरे वर्ग को दबाने के लिए किया जाता रहा है। समाजवादी राज्य में सर्वहारा वर्ग राज्य के दमनकारी अंगों जैसे सेना, पुलिस, जेल, न्यायिक प्रणाली इत्यादि का प्रयोग मध्य वर्ग के विरुद्ध करेगा। मार्क्स तर्क देते हैं कि यदि प्रजातंत्र का अर्थ बहुसंख्यक का शासन होता है, तो सर्वहारा राज्य सबसे प्रजातांत्रिक राज्य है क्योंकि पहली बार इतिहास के वार्षिकी में सत्ता बहुसंख्यक के हाथों में आती है। सर्वहारा राज्य के पहले, सत्ता बहुसंख्यक के हाथों में आती है। सर्वहारा राज्य के पहले, सत्ता सदैव अल्पसंख्यकों के हाथों में रही है। इसलिए यदि बहुमत का शासन मापदंड हैं, तो मात्र सर्वहारा राज्य ही प्रजातांत्रिक राज्य कहा जा सकता है।

26.3.7 साम्यवाद

सर्वहारा के अधिनायकत्व की जीवित देखभाल के अंतर्गत, समाजवादी राज्य साम्यवाद के रूप में उभरेगा। समाजवाद का क्षणभंगुर अवस्था है। यह साम्यवाद से संभावित उद्भव का रास्ता प्रषस्त करेगा, जो स्थिर और स्थायी होता है। यह सामाजिक विकास का काल होगा। साम्यवाद की स्थापना के बाद आगे कोई सामाजिक परिवर्तन नहीं होगा। द्वन्दात्मक प्रक्रिया का अंत हो जाएगा। एक पूर्ण, विवेकषील सामाजिक प्रणाली की स्थापना होगी जो कि शत्रुओं और विरोधाभासों से मुक्त होगी। कोई वर्ग विरोधाभास नहीं होगा, इसलिए कोई वर्ग संघर्ष नहीं होगा। वास्तव में साम्यवाद वर्गविहीन, निजी सम्पत्तिविहीन और शोषणविहीन समाज होगा।

साम्यवाद समाज में उत्पादन के साधनों के निजी स्वामित्व के रूप में कोई निजी सम्पत्ति नहीं होगी। उत्पादन के साधनों पर समुदाय का स्वामित्व होगा। सहयोग न कि प्रतियोगिता साम्यवादी समाज का आधार होगा। उत्पादन खपत के लिए होगा न कि मुनाफा कमाने के लिए; मुनाफे की प्रवृत्ति सामाजिक आवष्यकताओं में बदल जाएगी। जब कोई निजी सम्पत्ति नहीं होगी, तो कोई शोषण नहीं होगा। जब कोई शोषण नही होगा, तो कोई वर्ग विभाजन, कोई सम्पत्ति सम्पन्न और सम्पत्तिविहीन वर्ग, या कोई प्रभावी और आश्रित वर्ग नहीं होगा। जब कोई वर्ग विभाजन नहीं होता है, तो कोई वर्ग संघर्ष नहीं होता है, इसलिए राज्य की आवष्यकता नहीं होती है। इस कारण से साम्यवादी समाज वर्गविहीन और राज्यविहीन समाज होगा।

राज्य शोषण का मंत्र होता है, यह वर्ग यंत्र होता है, परिणामस्वरूप समाज में वर्ग विभाजन होता है। साम्यवाद में श्रमिकों का मात्र एक वर्ग होता है, कोई दूसरा वर्ग दबाने और दमन करने के लिए नहीं होता है, अतः राज्य की कोई आवष्यकता नहीं होगी। यह साम्यवादी

समाज में फालतू बन जाएगा। इसे संग्राहालय को सौंप दिया जाएगा। राज्य फिर भी खत्म नहीं होगा। यह धीरे-धीरे विलीन हो जाएगा।

साम्यवादी समाज लुईस ब्लां (Louise Blanc) के सिद्धांत – 'प्रत्येक अपनी क्षमता के अनुसार कार्य करेंगें और प्रत्येक की अपनी आवष्यकता के अनुसार प्राप्त होगा,' – के अनुसार शासित होगा। परजीवियों के लिए कोई स्थान नहीं होगा। जो काम नहीं करेगा, वह खायेगा नहीं। सिर्फ श्रमिकों का एक वर्ग होगा। समूचा समाज श्रमिक वर्ग में बदल जायेगा। शोषण का कोई स्थान नहीं होगा। यह समतावादी समाज होगा। लोगों के बीच सद्भावपूर्ण संबंध होगा।

बोध प्रष्न 3

नोटः i) अपने उत्तर के लिए नीचे दिए गए रिक्त स्थान का प्रयोग करें।

ii) अपने उत्तरों के सुझावों के लिये इकाई का अन्त देखें।

1) अतिरिक्त मूल्य का सिद्धांत क्या हैं?

....

....

....

....

....

....

2) वर्ग संघर्ष की अवधारणा की चर्चा कीजिए।

....

....

....

....

....

3) साम्यवादी समाज की प्रमुख विषेषताओं का वर्णन तथा मूल्यांकन करें।

....

....

....

....

....

....

....

26.4 अलगाव का सिद्धांत

मार्क्सवादी दर्षन में दो विषिष्ट काल रहे हैं। 1844 का *इक्नॉमिक एण्ड फिलॉसॉफिक मैन्युस्क्रिप्टस* मार्क्सवाद के मानवीय चेहरे को उजागर करता है। इसमें बिना वर्ग शत्रुता, वर्ग संघर्ष तथा हिंसात्मक क्रांति के संदर्भ के पूँजीवाद को विष्लेषित किया गया है। यहाँ पूँजीवाद के बुरे प्रभावों की अलगाव, पहचान और स्वतंत्रता के खोने के आधार पर व्याख्या की गयी है। मार्क्स के इन दृष्टिकोणों को युवा मार्क्स के साथ जोड़ा जाता हैं। 1848 के साम्यवादी कम्युनिस्ट *मैनिफैस्टो* में मार्क्स के दर्षन में एक बदलाव देखने को मिलता है। बाद का मार्क्स परिपक्व मार्क्स के नाम से जाना जाता है, जिन्होंने वैज्ञानिक समाजवाद के सिद्धांत की स्थापना की। मार्क्स के प्रारम्भिक विचारों को सिर्फ 1932 में प्रकाषन के साथ ही जाना गया था।

अलगाव का सिद्धांत एक मार्क्सवादी अवधारणा है। हंगेरियन मार्क्सवादी जार्ज लुकास ने 1932 के प्रकाषन के पहले ही पूरी तरह से अपने बलबूते अलगाव के सिद्धांत को विकसित किया है। फिर भी अलगाव की अवधारणा मैन्युस्क्रिप्टस प्रकाषन के बाद ही लोकप्रिय बनी। मार्क्स ने अलगाव के चार स्तरों का ज़िक्र किया है। सर्वप्रथम मनुष्य अपने उत्पाद और काय प्रक्रिया से अलग-थलग पड़ जाता है, क्योंकि श्रमिक की कैसे उत्पादन करे। द्वितीय व्यक्ति प्रकृति से अलग हो जाता है। उसका कार्य उसे एक रचनात्मक श्रमिक के रूप में संतोष प्रदान नहीं करता है। यांत्रिकीकरण के अन्तर्गत, कार्य तेज़ी से समयबद्ध और उबानेवाला बनता जा रहा है। तीसरे, व्यक्ति दूसरे व्यक्ति से अलग से हो जाता है। पूँजीवादी प्रणाली का प्रतियोगी चरित्र प्रत्येक को अन्य के खर्च पर जीने को मजबूर कर एक दूसरे से अलग कर देता है। आखिरकार व्यक्ति स्वयं से कट जाता है। आवष्यकता का क्षेत्र उसके जीवन को काबू करता है और सांस्कृतिक विरासत के लिए कोई समय नहीं होता है। पूँजीवादी प्रणाली पूँजी और सम्पत्ति के निजी स्वामित्व के द्वारा उत्पन्न अवस्थाओं को सभी मानवीय संकायों और क्षमताओं में अधीनस्थत करती है। पूँजीपति अपने आप में श्रमिक से कम नहीं होता है, लेकिन पैसे के निरंकुष शासन का गुलाम बन जाता है।

26.5 स्वतंत्रता का सिद्धांत

मानववादी दर्षन के रूप में मार्क्सवाद मुख्यतया मानव स्वतन्त्रता का दर्षन है। स्वतन्त्रता न सिर्फ मानवीय आवष्यकताओं की भौतिक संतृष्टता है, बल्कि अमानवीयकरण, संबंध विच्छेद और अलगाव की अवस्थाओं को दूर करना भी है। पूँजीवादी प्रणाली आवष्यकता को स्वतंत्रता के विरोधी के रूप में वर्गीकृत करती है। आवष्यकता उन अवस्थाओं को सूचित करती है, जिसके अंतर्गत प्रकृति के अनिवार्य नियम व्यक्ति के जीवन को शासित करते हैं। प्रकृति के इन नियमों में मानव इच्छा की स्वतंत्रता निहित होती है। व्यक्ति इन नियमों के वैज्ञानिक ज्ञान को प्राप्त कर सकता है, लेकिन उन्हें अपनी इच्छा से बदल नहीं सकता है। स्वतंत्रता आवष्यकता से अलग हट नहीं सकती है। स्वतन्त्रता प्रकृति के इन नियमों के ज्ञान में निहित होती है और इन नियमों को क्षमता प्रदान करने जो मानव समाज के स्वतन्त्रता के निष्चित लक्ष्य की ओर कार्य करता है।

इस प्रकार पूँजीवादी प्रणाली को चलाने वाली उत्पादक शक्तियों का ठोस ज्ञान और एक कार्यक्रम, आवष्यकता की राजधानी से स्वतन्त्रता की राजधानी तक मानवीय परिवर्तन को निष्पादन करेगा। मानव समाज की स्वतंत्रता और सच्ची स्वतन्त्रता का अनुभव सिर्फ पूँजीवाद के विनाष और साम्यवाद की स्थापना से ही संभव होता है।

बोध प्रश्न 3

नोटः i) अपने उत्तर के लिए नीचे दिए गए रिक्त स्थान का प्रयोग करें।

ii) अपने उत्तरों के सुझावों के लिये इकाई का अन्त देखें।

1) आप अलगाव के सिद्धांत या स्वतन्त्रता के सिद्धांत का वर्णन करें।

....

....

....

....

....

....

....

26.6 आलोचनात्मक समीक्षा और अवलोकन

मार्क्सवाद कठोर आलोचना का विषय रहा है। इसने समाज को दो वर्गों, जिनके पास कुछ (the haves) और जिनके पास कुछ नहीं है (the have-nots) में विभाजित किया है। यह वास्तविकता से दूर है। समाज बहुत जटिल होता है और कुई समूहों में बंटा होता है। जैसे कि मार्क्सवाद की परिकल्पना है, वैसा कोई स्पष्ट वर्गों का विभाजन नहीं होता है। ज्यादातर, इसमें विषाल मध्य वर्ग होता है। मार्क्सवादी विचारकों ने भविष्यवाणी की थी कि पूँजीवाद के विकास के साथ, मध्य वर्ग विलीन हो जाएगा और सर्वहारा वर्ग के साथ मिल जाएगा लेकिन अभी तक ऐसा नहीं हुआ है और ऐसा होने की कोई संभावना नहीं है। वास्तव में इसके विपरीत हुआ है; मध्य वर्ग ने अपनी स्थिति को मजबूत किया है और अपने आकार को बढ़ाया है। मार्क्सवादियों ने पूँजीपति वर्ग के सिमटने की बातें की थीं। यहाँ पुनः ठीक इसके विपरीत हुआ है। सिमटने के बदले पूँजीपति वर्ग का आधार विस्तृत हुआ है। मार्क्स ने पूँजी संग्रह की बात की थी, लेकिन पूँजी का बिखराव हो गया है। सर्वहारा वर्ग की स्थिति वैसी नहीं बिगड़ी है, जैसे कि मार्क्स ने भविष्यवाणी की थी। इस प्रकार, पूँजीवाद की वास्तविक कार्यकारी प्रणाली ने वर्गों के मार्क्सवादी सिद्धांत को गलत साबित किया है।

मार्क्सवादियों ने भविष्यवाणी की थी कि पूँजीवाद अन्तर्विरोध के कारण बिखर जाएगा। लेकिन, अभी तक ऐसा घटित नहीं हुआ है। कोई विकसित पूँजीवादी व्यवस्था ध्वस्त नहीं हुई है। पूँजीवाद ने अपने लचीलेपन को साबित किया है। दूसरी ओर, समाजवादी व्यवस्था, दुनिया के विभिन्न भागों में ध्वस्त हो गयी है। पूँजीवाद के पास सामंजस्य बिठाने की अपार शक्ति है। यही इसके जीवंत होने का मुख्य कारण है। मार्क्स पूँजीवाद का सही आंकलन करने में असफल रहे हैं।

मार्क्स के अनुसार, सर्वहारा क्रांति तभी होगी, जब पूँजीवाद परिपक्व हो जायेगा। पिछड़े सामंतवादी समाज में सर्वहारा क्रांति के घटित और सफल होने का अवसर नहीं होता है। लेकिन वास्तव में यही घटित हुआ है। क्रांति सिर्फ सामंतवादी समाजों जैसे रूस, चीन, वियतनाम, क्यूबा इत्यादि देषों में हुई हैं। यह रूसी मार्क्सवादियों के दो गुटों, प्लैखनॉव (Plekhnov) के नेतृत्व में मैंषेविक्स (Mensheviks) और लेनिन के नेतृत्व में बॉलषेविक्स (Bolsheviks) के बीच विवाद का मुख्य मुद्दा था। अंततः बॉलषेविक्स का मैनषेविक्स के

ऊपर वर्चस्व रहा, लेकिन वे मार्क्स के विचारों के अधिक नज़दीक थे। मार्क्स के अनुसार, उनके विचार सामाजिक विकास के जन्म की वेदना को कम कर सकते हैं, लेकिन किसी भी अवस्था को नज़रअंदाज नहीं कर सकते। फिर भी लेनिन और ट्रॉटस्की ने रूस में और माओ ने चीन में पूँजीवाद की स्थापना की प्रक्रिया से गुज़रे बिना सामंतवादी समाज में साम्यवाद की स्थापना की। इस प्रत्यक्ष विरोधाभास के समाधान के लिए ट्रॉटस्की ने *थ्योरी ऑफ परमानेंट रिवॉल्युषन,* को विकसित किया। उन्होंने अपने सिद्धांत में मध्यवर्ग की क्रांति को सर्वहारा की क्रांति के साथ मिला दिया। ये दोनों क्रांतियां ट्रॉटस्की की दृष्टि में साथ-साथ घट सकती हैं। यद्यपि यह अधिक व्यवहारिक विचार प्रतीत होता है, यह मार्क्सवाद के बुनियादी सिद्धांतों को नहीं स्वीकार करता है।

आर्थिक निर्धारकवाद के मार्क्सवादी सिद्धांत की कठोर आलोचना की गयी है। यह सिर्फ आर्थिक कारक ही नहीं होता है, बल्कि दूसरे कारक भी सामाजिक परिवर्तन लाने में समान रूप से महत्त्वपूर्ण होते हैं। यदि अर्थव्यवस्था, राजनीति, समाज, नैतिकता, मूल्य प्रणाली इत्यादि को निर्धारित करती है, तब अर्थव्यवस्था भी अपने आप इनके द्वारा निर्धारित होती है। यह दो तरफा प्रक्रिया है। आर्थिक शक्तियाँ राजनीति, समाज, संस्कृति, धर्म, मूल्यों, आदर्षों इत्यादि के प्रभावों से अछूती नहीं है। यदि आधार या नींव अधिरचना को आकार देते हैं, तो अधिरचना भी नींव को आकार देती है। इस प्रकार आर्थिक निर्धारकवाद के सिद्धांत को स्वीकारा नहीं जा सकता है। बाद के मार्क्सवादी विचारकों, जैसे कि ग्रामसी ने अधिरचना की महत्त्वपूर्ण भूमिका को स्वीकार किया।

सर्वहारा का अधिनायकत्व और साम्यवाद की मार्क्सवादी अवधारणाओं, में कई कमियाँ हैं। सर्वहारा क्रांति के बाद सर्वहारा मध्य वर्ग से राज्य की मषीनरी को छीन लेगा। साम्यवाद की स्थापना के बाद राज्य फालतू हो जाएगा और धीरे-धीरे विलीन हो जाएगा। यह घटित नहीं हुआ है। समाजवादी समाज में राज्य वास्तव में सर्व-षक्तिमान बन गया। कमज़ोर होने के बदले राज्य ने अपनी स्थिति दृढ़ बना ली है और इसके मुरझाने की कोई संभावना नहीं है। राज्य समाजवादी और मार्क्सवादी समाज में महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाता रहेगा और इसे संग्रहालय को कभी भी सौंपे जाने की कोई संभावना नहीं है।

समाजवादी समाज की जहाँ कहीं भी स्थापना की गयीं है, या तो उसे उतार फेंका गया या नज़रअंदाज किया गया है। जहाँ कहीं भी यह अभी भी जीवित है, इसे बहुत सारे परिवर्त्तन करने के लिए मजबूर होना पड़ा है, जो वर्गीय मार्क्सवाद की विचारधारा से मेल नहीं खाता है। पूर्वी यूरोप में सामयवाद की असफलता, रूस में बिखराव और चीन में आर्थिक सुधारों ने फ्रांसिस फुकुयामा सरीखे विचारकों को मार्क्सवाद की ऑबिटयुरी (obituary) लिखने को बाध्य किया है। फुकुयामा ने अपनी प्रसिद्ध पुस्तक *एण्ड ऑफ हिस्ट्री* में शीतमुद्रा कालीन संसार (post-coldwar) में साम्यवाद के ऊपर पूँजीवाद की विजय का दावा किया है। उनके अनुसार पूँजीवाद की साम्यवाद पर विजय, इतिहास के अंत को दर्षाता है। यहाँ फुकुयामा हेगेल के अर्थ में इतिहास की बात करते हैं। पूँजीवाद के बाद आगे कोई आर्थिक और राजनीतिक विकास नहीं होगा। पूँजीवाद सबसे विवेकषील और पूर्ण प्रणाली है। यह सबसे पूर्ण विचारधारा और दर्षन है। इसलिए, वैचारिक और दार्षनिक विकास का अंत पूँजीवाद के उद्‌भव के साथ ही हो जाता है। इसका मुख्य चुनौतीकर्त्ता साम्यवाद पराजित हो गया है और यह आगे अपने दावों को साबित करता है कि यह मानवता द्वारा कभी भी विकसित प्रणालियों में से सबसे उत्तम सामाजिक, आर्थिक और राजनीतिक प्रणाली है।

फुकुयामा के द्वारा दिए गए सिद्धांत को स्वीकार करना बहुत ही कठिन है। मार्क्सवाद की प्रमुखता दो क्षेत्रों में निहित है। सर्वप्रथम, इसे सामाजिक विष्लेषण का एक कारक बनाया

गया है। द्वितीय, यह आवाज़विहीन को आवाज़ देता है। यह गरीबों, उत्पीड़ित और दमित लोगों का दर्षन हैं। यदि मार्क्सवाद की देन का विष्लेषण इन दोनों क्षेत्रों के संदर्भ में किया जाये तो, हम इस निष्कर्ष पर पहुँचेंगे कि यह अभी भी प्रासंगिक है और फिजूल नहीं है, जैसा कि उदारवादी आलोचकों द्वारा दावा किया जाता है। सामाजिक विष्लेषण के एक आयाम के रूप में मार्क्सवाद आज भी प्रासंगिक है, जैसा कि यह पहले था। सामाजिक विष्लेषण की एक विधि के रूप में इसका महत्त्व कभी भी समाप्त नहीं होगा, चाहे सामाजवादी राज्य जीवित रहता है या समाप्त हो जाता है।

मार्क्सवाद एक विचारधारा के रूप में अपनी श्रेष्ठता निष्चियतया खो चुका है, लेकिन यह पूरी तरह से फालतू नहीं है। जब तक शोषण रहेगा, लोगों का दमन और उत्पीड़न होता रहेगा, मार्क्सवाद प्रासंगिक बना रहेगा। मार्क्सवाद, शोषित और उत्पीड़ित के दर्षन के रूप में उनकी मुक्ति के लिए जनता को प्रेरित करता रहेगा। इसलिए, इसकी पराजय और अप्रासंगिकता का प्रष्न नहीं है। वास्तव में, प्रणालियाँ जो बिखर चुकी हैं, वे वर्गीय मार्क्सवादी सिद्धांतों पर संगठित नहीं थी। वे मार्क्सवादी-लेनिनवाद और स्टालिनवाद से अलग थीं। इसलिए यह लेनिनवादी-स्टालिनवादी प्रणालियाँ है, जो यूरोप और जहाँ कहीं भी वे हैं, बिखर चुकी हैं और जो वर्गीय मार्क्सवाद नहीं है।

मार्क्सवाद एक आयाम के रूप में सामाजिक विष्लेषण के लिए विद्वानों के द्वारा उपयोग किया जाता रहेगा और शोषित-दमित लोग अपनी मुक्ति के लिए मार्क्सवादी दर्षन का समर्थन करते रहेंगें। यहाँ मार्क्सवाद कभी भी अप्रासंगिक नहीं बनेगा। यह सदैव उदारवाद का वैकल्पिक दर्षन बना रहेगा। मार्क्सवाद उदारवाद के अत्याचारों पर प्रभावकारी रोक के रूप में भी कार्य करेगा। यह पूँजीवादी प्रणाली की कठोरता को कम करेगा।

बोध प्रष्न 4

नोटः i) अपने उत्तर के लिए नीचे दिए गए रिक्त स्थान का प्रयोग करें।

ii) अपने उत्तरों के सुझावों के लिये इकाई का अन्त देखें।

1) मार्क्सवादी सिद्धांत पर प्रहार के प्रमुख आधारों की विवेचना करें।

....

....

....

....

....

2) मार्क्सवाद की समकालीन प्रासंगिकता का परीक्षण कीजिए।

....

....

....

....

....

26.7 सारांष

इस इकाई में हमने विभिन्न प्रकार के समाजवाद जैसे काल्पनिक और वैज्ञानिक समाजवाद, विकासवादी तथा क्रांतिकारी समाजवाद की चर्चा की है। मार्क्सवाद के बुनियादी सिद्धांतों जैसे द्वन्दात्मक भौतिकवाद, ऐतिहासिक भौतिकवाद, अतिरिक्त मूल्य, वर्ग संघर्ष, क्रांति, सर्वहारा का अधिनायकत्व और साम्यवाद की विस्तारपूर्वक जानकारी दी गयी है। ये सिद्धांत वैज्ञानिक और क्रांतिकारी समाजवाद के आधार का निर्माण करते हैं। मार्क्सवाद मात्र वर्ग विद्वेष, वर्ग संघर्ष, वर्ग विरोध और हिंसात्मक क्रांति का दर्षन नहीं है। यह बुनियादी तौर पर मानवता और स्वतन्त्रता का दर्षन है। पूँजीवादी समाज ने संबंध-विच्छेद, विलगाव और पहचान और स्वतंत्रता के विनाष को बढ़ावा दिया है। हम मार्क्स के मानवीय चेहरे को उनके प्रारम्भिक लेखों में, विषेषकर उनके *इक्नॉमिक एण्ड फिलॉसॉफिक मैन्यूस्क्रिपट्स ऑफ 1844* में पाते हैं। विलगाव और स्वतंन्त्रता के सिद्धांत में, हम मानववादी मार्क्स को पाते हैं। साम्यवादी घोषणा पत्र और *दास कैपिटल* में, जो कि उनके बाद के लेखन हैं, उसमें हम एक परिपक्व और क्रांतिकारी मार्क्स को पाते हैं। इस प्रकार युवा और मानवादी मार्क्स और परिपक्व और क्रांतिकारी, दो मार्क्स हैं। फिर भी, दोनों के बीच कोई विभाजन नहीं हैं। दोनों के मध्य विचारों का प्रवाह है, और इसलिए कोई भी भिन्नता छिछोली है।

मार्क्सवाद एक जीवंत दर्षन है। मार्क्स के बाद इसे लेनिन, ट्रॅाटस्की, स्टैलिन, रोजा़ लग्जंमबर्ग, ग्राम्सी, लुकास, ऐलथूज़ैर, माओ आदि विचारकों ने समृद्ध किया है। विचारधारा और इतिहास के अंत के प्रतिपादकों ने मार्क्सवाद के, उल्लेख खत्म होने का किया है। लेकिन मार्क्सवाद सामाजिक विष्लेषण के एक आयाम और उत्पीड़ित वर्ग के दर्षन के रूप में प्रासंगिक रहेगा। यह जनमानस को उनकी मुक्ति के लिए संघर्ष हेतु प्रेरित करेगा। मार्क्सवाद एक क्रांतिकारी दर्षन है। यह एक सामाजिक परिवर्तन का दर्षन है। मार्क्स के शब्दों में, दार्षनिकों ने विष्व की व्याख्या का प्रयास किया है, पर सवाल है इसे बदलने का इसका उद्देष्य एक वर्ग द्वारा दूसरे वर्ग के शोषण से मुक्त समतावादी समाज की स्थापना करना है। सिर्फ मार्क्सवाद के माध्यम से, शायद मानवता आवष्यकता के क्षेत्र से स्वतन्त्रता के क्षेत्र तक बढ़ेगी।

26.8 कुछ उपयोगी पुस्तकें

ऐविनेरी, श्लोमों, *द सोषल एण्ड पॉलिटिकल थॉट ऑफ कार्ल मार्क्स,* कैम्ब्रिज, कैम्ब्रिज यूनिवर्सिटी प्रेस, 1971

बर्लिन, इज़ाइया, *कार्ल मार्क्स : हिज़ लाईफ एण्ड ऐनवाइरमैंट,* न्यू यॉर्क, ऑक्सफोर्ड यूनिवर्सिटी प्रेस, 1996

फुकुयामा, फ्रांसिस, *दी एण्ड ऑफ हिस्ट्री एण्ड द लास्ट मैन,* न्यू यार्क, फ्री प्रेस, 1992

टकर, रॉबर्ट, *फिलॉस्फी एण्ड मिथ ऑफ कार्ल मार्क्स,* कैम्ब्रिज, कैम्ब्रिज यूनिवर्सिटी प्रेस 1961

मैकक्लेलैंड़, जे.एस., *ए हिस्ट्री ऑफ वैस्टर्न पॉलिटिकल थॉट,* लंदन, राऊटलेज, 1996

26.9 बोध प्रश्नों के उत्तर

बोध प्रश्न 1

1) उप-भाग 26.3.1 और 26.32 देखें

बोध प्रश्न 2

1) उप-भाग 26.4.1 देखें

2) उप-भाग 26.4.2 देखें

बोध प्रश्न 3

1) उप-भाग 26.4.3 देखें

2) उप-भाग 26.4.4 देखें

3) उप-भाग 26.4.7 देखें

बोध प्रश्न 4

1) भाग 26.5 और 26.6 देखें

बोध प्रश्न 5

1) भाग 26.7 देखें